

संपादकीय

भारतीय अर्थव्यवस्था को
बड़ा सहारा दे गया इस
बार का दीपावली पर्व

भारतीय संस्कृत में त्योहारों का विशेष महत्व है। दीपावली के त्योहार को तो भारत में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना गया है। देश में दीपावली पर्व के एक दो माह पूर्व ही सभी परिवारों द्वारा इसे मनाने की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती हैं। देश के सभी नागरिक मिलकर वस्तुओं की ख़बूल खरीदारी करते हैं जिसके कारण देश की अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। इस वर्ष की दीपावली भी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी लाई है। तीव्र गति से संकलित किए गए आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष दीपावली के दौरान देश में 125,000 करोड़ रुपए से अधिक का खुदरा व्यापार सम्पन्न हुआ है जो पिछले दस वर्षों की इसी अवधि के दौरान हुए खुदरा व्यापार में सबसे अधिक है। नौकरी जॉबस्पीक द्वारा जारी एक प्रतिवेदन के अनुसार देश में अक्टूबर 2021 माह में रोजगार के अवसरों में 43 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे अधिक मांग वृष्टिगोचर हुई है, इस क्षेत्र में अक्टूबर 2021 माह में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में रोजगार की मांग में 85 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। दीपावली के महान पर्व के दौरान खुदरा व्यापार में हुई अतुलनीय वृद्धि के चलते सूचना प्रौद्योगिकी के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों में बहुत अच्छी वृद्धि दर्ज की गई है। सबसे अच्छी खबर तो यह आई है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में, तेजी से औपचारीकरण हो रहा है। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा जारी एक प्रतिवेदन के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था में गैर-औपचारीकृत लेन-देनों का योगदान वर्ष 2018 में 52 प्रतिशत था अर्थात देश में लगभग आधी अर्थव्यवस्था गैर-औपचारीकृत रूप से कार्यरत थी परंतु अब यह योगदान घटकर लगभग 20 प्रतिशत हो गया है। किसी भी अर्थव्यवस्था का औपचारीकरण होने के कारण कर संग्रहण में वृद्धि होती है, विकास दर बढ़ती है एवं श्रमिकों के शोषण में कमी आती है। औपचारीकरण की प्रक्रिया में दरअसल सबसे अधिक लाभ तो श्रमिकों का होता है क्योंकि इससे उद्योग जगत एवं रोजगार प्रदाता द्वारा, सरकार द्वारा घोषित किए गए सभी प्रकार के लाभ एवं प्रोत्साहन, श्रमिकों को प्रदान किए जाने लगते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के तेजी से हो रहे औपचारीकरण के पीछे डिजिटल लेन-देन का बहुत अधिक योगदान रहा है। दीपावली एवं अन्य त्योहारों के कारण अक्टूबर 2021 माह के दौरान यूनिफाईड पेमेंट

हृष्टरफेस (UPI) पर 771,000 करोड़ रुपए के 421 करोड़ व्यवहार सम्पन्न हुए हैं, जो अपने आप में एक रिकार्ड है। UPI प्लेटफॉर्म का प्रारम्भ वर्ष 2016 में हुआ था एवं अक्टूबर 2019 में 100 करोड़ व्यवहार के स्तर को छुआ गया था तथा अक्टूबर 2020 में 200 करोड़ व्यवहार के स्तर को छुआ गया था, उसके बाद तो लगातार तेज गति से वृद्धि आंकी गई है। देश में आर्थिक गतिविधियों में लगातार हो रहे सुधार के कारण जीएसटी संग्रहण में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज हो रही है। मार्च 2021 में जीएसटी संग्रहण रिकार्ड 140,000 करोड़ रुपए का रहा था जो अक्टूबर 2021 में 130,000 करोड़ रुपए से अधिक का रहा है। इस प्रकार जुलाई 2017 में जीएसटी प्रणाली के लागू किए जाने के बाद से यह रिकार्ड स्तर के मामले में दूसरे नम्बर पर है। अब तो औसत रुप से प्रत्येक माह जीएसटी संग्रहण एक लाख करोड़ रुपए से अधिक का ही हो रहा है। इसके साथ ही अंतरराज्यीय व्यापार के मामले में जारी किए जा रहे ईवे बिलों की संख्या में भी लगातार बहुत अच्छी वृद्धि देखने में आ रही है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों की वसूली में हो रही वृद्धि के चलते केंद्र सरकार के वित्तीय संतुलन में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान राजकोषीय घटे के बारे में बजट में किए गए अनुमान के विरुद्ध केंद्र सरकार का राजकोषीय घटा अप्रैल-सितम्बर 2021 की अवधि के दौरान केवल 35 प्रतिशत रहा है जो अप्रैल-सितम्बर 2020 की इसी अवधि के दौरान 115 प्रतिशत था। राजकोषीय घटे का 526,000 करोड़ रुपए का स्तर पिछले 4 वर्ष के दौरान की इसी अवधि के स्तर से भी कम है। यह इसलिए सम्भव हो सका है क्योंकि देश में प्रत्यक्ष करों के संग्रहण में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है। हर्ष का विषय यह भी है कि केंद्र सरकार द्वारा लगातार किए गए प्रयासों के कारण देश में खुदरा मुद्रास्फीति की दर में भी कमी आई है। सितम्बर 2021 माह में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 4.35 प्रतिशत रही है, यह पिछले 5 माह के दौरान खुदरा मुद्रास्फीति की दर में सबसे कम है। अगस्त 2021 माह में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 5.3 प्रतिशत एवं सितम्बर 2020 माह में 7.27 प्रतिशत थी। अभी हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा पेट्रोल एवं डीजल पर एक्साइज कर की दरों में की गई कमी एवं भाजपा और इसके सहयोगी दलों द्वारा शासित राज्यों द्वारा पेट्रोल एवं डीजल पर लागू VAT की दरों में की गई कमी के कारण पेट्रोल एवं डीजल के प्रति लीटर विक्रय मूल्य में लगभग 10 से 15 रुपए तक की कमी हुई है जिसके कारण भी खुदरा मुद्रास्फीति की दर और भी कम होने की सम्भावना आगे आने वाले समय के लिए बढ़ गई है। स्वाभाविक रूप से आर्थिक गतिविधियों में हो रहे लगातार सुधार के चलते बैंकों द्वारा प्रदान की जा रही ऋणराशि में भी तेजी देखने में आ रही है। विशेष रूप से त्वाहारों के मौसम में व्यक्तिगत ऋणराशि एवं कृषि के क्षेत्र में प्रदान की जाने वाली ऋणराशि में तेजी कुछ अधिक ही दिखाई दे रही है। सितम्बर 2021 माह में गृह ऋण, वाहन ऋण, क्रेडिट कार्ड आदि व्यक्तिगत ऋण के क्षेत्र में 12.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो सितम्बर 2020 माह में दुर्वा 8.4 प्रतिशत की वृद्धि दर से कहीं अधिक है। इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में प्रदान की जा रही ऋणराशि में भी सितम्बर 2021 माह में 9.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है जो सितम्बर 2020 माह की वृद्धि दर 6.2 प्रतिशत से कहीं अधिक है। मध्यम उद्योग को प्रदान की गई ऋणराशि में सितम्बर 2021 माह में 49 प्रतिशत की आकर्षक वृद्धि

देखने में आई है जो सितम्बर 2020 माह में 17.5 प्रतिशत हो रही थी। सूक्ष्म एवं लघु उद्योग को प्रदान की गई ऋणराशि में सितम्बर 2021 माह में 9.7 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई है जबकि सितम्बर 2020 माह में 0.1 प्रतिशत की कमी आंकी गई थी। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में विकास दर को गति प्रदान करने में विदेशी व्यापार का भी बहुत योगदान रहता है। दरअसल कई देशों यथा चीन जैसे देशों की विकास दर लगातार कुछ दशकों तक 10 प्रतिशत से अधिक इसी कारण से बनी रही है। अभी हाल ही के समय में भारत से होने वाले निर्यात में भी भारी वृद्धि देखने में आ रही है।

आस्था, प्रकृति व प्राचीन संस्कृति के संगम का महापर्व है छठ पूजा

दीपक कुमार त्यार्ग

दुनिया में भारत की एक निराल
पहचान है विदेशी लोग भारत क
उत्सवों का देश कहते हैं, क्योंकि यह
पर सेलिब्रेशन करने के पल-पल
बहाने ढूँढ़े जाते हैं। वैसे भी हमारा
प्यारा देश भारत दुनिया के सब
प्राचीन धर्म इसनातन धर्म के विभिन्न
त्योहारों का देश है, हम लोग विकट
विकट परिस्थितियों में भी पू

हर्षोल्लास के साथ अपने पूजा-पाठ
उत्सवों का आनंद लेते हैं। पिछले पूर्व
हफ्ते दीपावली के पंच दिवसीय पावन
पर्व को इस वर्ष कोरोना से राह
मिलने के चलते सभी देशवासियों
धूमधाम पूर्ण माहात्म में हर्षोल्लास वेस
साथ मनाया था। अब सूर्योपासना
प्रकृति पूजा के महापर्व रुचिर व
बड़ी धूमधाम से मनाने की तैयारी रही
गयी है, हालांकि पहले रुचिर पूजा
विहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और
नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनायी जाती
थी, लेकिन अब इसका दायरा बढ़कर
पूरे देश के साथ-साथ विदेशों में भी रुचिर
गया है, आज इस त्योहार से देशवासी
विदेश के करोड़ों लोगों की आस्था
जुड़ी हुई है। इस पर्व में स्वच्छता व
विशेष ध्यान रखा जाता है, इस वर्ष
छठ पूजा का चार दिवसीय महापर्व
कार्तिक शुक्ल चतुर्थी यानी 8 नवंबर
2021 सोमवार के दिन इनहाय खाय
से शुरू हो रहा है और यह कार्तिक

सूर्योपासना का यह छठ पूजा
का महापर्व भगवान सूर्य,
उनकी पत्नी उषा और
प्रत्युषा, प्रकृति, जल, वायु
और भगवान सूर्य की बहन
छठी मैया को विशेष रूप से
समर्पित है। प्राचीन धार्मिक
मान्यताओं के अनुसार छठी
माता को भगवान सूर्य की
बहन माना जाता है।



करते हैं। दूसरे दिन यानी कार्तिक शुक्रवर्ष पक्ष की पंचमी के दिन रथरना' होता है, इस दिन लोग उपवास रखकर शाम को गन्ने के रस की खीर का सेवन करते हैं, इसके पश्चात उपवास की बेहद कठिन परीक्षा शुरू होती है सप्तमी को उपवास खोलने तक कुछ भी खाना व पीना वर्जित होता है। वहीं तीसरे दिन कार्तिक शुक्रवर्ष पक्ष की षष्ठी होने के चलते रथठ पूजारू की विशेष विधान के साथ पूजा अर्चना की जाती है, इस दिन रथठ पर्वरू के विशेष प्रसाद में रथेकुवार पकवान को तैयार किया जाता है और उपवास रखने वाले लोग स्नान करके जल में खड़े होकर संध्याकाल में अस्त होते भगवान् सूर्य की आराधना करके उनको अर्च्य देते हैं, साथ में विशेष प्रकार का पकवान रथेकुवारू और मौसमी फल चढ़ाते हैं, इस दिन रथठ पूजारू घाटों पर या जहां जल में खड़े होकर पूजा करने की स्थिति हो वह पर की जाती है, इन सभी जगहों पर भीड़भाड़ के चलते मेला लगा रहता है औथे दिन यानि कार्तिक शुक्रवर्ष पक्ष की सप्तमी के अंतिम दिन उपवास करके वाले लोग सूर्योदय से पहले स्नान करके अरुणोदय तक जल में खड़े होकर सूर्योपासना करते हैं और उन्हें हुए भगवान् सूर्य को अर्ध्य देकर उनवारे पूजा-आराधना करते हैं, इसके बाद उपवास करने वाले लोग कच्चे दूध और रथठी मातारू के प्रसाद व खाकर अपने व्रत का समापन करते हैं। इसके साथ ही कार्तिक शुक्रवर्ष की सप्तमी के दिन रथठ पूजारू महापर्व का पूर्ण उत्साह हर्षोल्लास माहोल में समापन हो जाता है आजकल कुछ जगह तो इस अवसरे पर जमकर आतिशबाजी तक की जा

**'प्राकृतिक संसाधन कभी खत्म नहीं होंगे',
यह सोच ही सर्वाधिक नुकसान पहुँचा रही है**

डॉ. शंकर सुवन सिंह

करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी एक तपता (आग) हुआ गोला थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया तपते हुए गोले से सागर, महाद्वीपों आदि का निर्माण हुआ। पृथ्वी पर अनुकूल जलवायु ने मानव जीवन तथा अन्य जीव सृष्टि को जीवन दिया जिससे इन सबका जीवन अस्तित्व कायम रखने वाली प्रकृति का निर्माण हुआ। मानव प्रकृति का हिस्सा है। प्रकृति व मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति व बिना मानव की परिकल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति दो शब्द से मिलकर बनी है— प्र और कृति। प्र अर्थात् प्रकृष्टि (श्रेष्ठ/उत्तम) और कृति का अर्थ है रचना। ईश्वर की श्रेष्ठ रचना अर्थात् सृष्टि प्रकृति से सृष्टि का बोध होता है। प्रकृति अर्थात् वह मूलत्व जिसका परिणाम जगत है। कहने का तात्पर्य प्रकृति के द्वारा ही समूह ब्रह्माण्ड की रचना की गई है। प्रकृति दो प्रकार की होती है प्राकृतिक प्रकृति और मानव प्रकृति। प्राकृतिक प्रकृति में पांच तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश शामिल हैं।

मानव प्रकृति में मन, बुद्धि और अहंकार शामिल हैं। प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध है। मनुष्य के लिए प्रकृति से अच्छा गुण नहीं है। प्रकृति की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह अपनी चीजों का उपभोग स्वयं नहीं करती। जैसे- नदी अपने जल स्वयं नहीं पीती, पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते, फूल अपने खुशबू पूरे वातावरण में फैला देते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि प्रकृति किसी के साथ भेदभाव या पक्षपात नहीं करती, लेकिन मनुष्य जब प्रकृति से अनावश्यक खिलवाड़ करता है तब उसका गुस्सा आता है। जिसे वह समय-समय पर सूखा, बाढ़, सैलाब तूफान के रूप में व्यक्त करते हुए मनुष्य को सचेत करती है। जल, जंगल और जमीन विकास के पर्याय हैं। जल, जंगल और जमीन का जब तक है तब तक मानव का विकास होता रहेगा। मानव जो छोड़ते हैं उसको पेड़-पौधे लेते हैं और जो पेड़-पौधे छोड़ते हैं उसको मानव लेते हैं। जल, जंगल और जमीन से ही जीवन है जीवन ही नहीं रहेगा तो विकास अर्थात् बिजली, सड़क आदि किसका काम के नहीं रहेगे। जल, जंगल और जमीन को संरक्षित करने के लिए मन का शुद्ध होना बहुत जरूरी है। मन आंतरिक पर्यावरण का हिस्सा है। जल, जंगल और जमीन वाह्य (बाहरी) पर्यावरण का हिस्सा है। हर धर्म ने माना है कि प्राकृतिक विनाश से विकास का संभव नहीं है। जलवायु पर्यावरण को नियंत्रित करने वाला प्रमुख कारक है, क्योंकि जलवायु से प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी, जलराशि तथा जीव जन्तु प्रभावित होते हैं। जलवायु मानव की मानसिकता तथा शारीरिक क्रियाओं पर प्रभाव डालती है। मानव पर प्रभाव

A wide-angle photograph of Shifen Waterfall in Taiwan. The waterfall consists of several distinct cascades flowing over dark, layered rock. A prominent black branch from a tree in the foreground hangs diagonally across the center of the frame. The background is filled with dense, vibrant green tropical foliage.

डालने वाले तत्वों के जलवायु सर्वाधिक प्रभावशाली हैं क्योंकि यह पर्यावरण के अन्य कारकों को भी नियंत्रित करती है। विश्व में जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय बना हुआ है। शहरों का भौतिक विकास जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, औद्योगिक प्रदूषण, विकिरण प्रदूषण इन रूपी दैत्यों ने पृथ्वी की जलवायु को पूर्णतः बदल दिया है। दीपावली के त्यौहार में पटाखों का खूब जम कर इस्तेमाल हुआ नहीं जाए वायु प्रदूषण। किसी भी त्यौहार का उल्लास मनाने में यदि हमारा वातावरण दूखित होता है तो इससे मानव प्रकृति और प्राकृतिक प्रकृति दोनों ही प्रभावित होती हैं। प्रकृति का पूरे मानव जाति के लिए एक सामान व्यवहार होता है।

प्रकृति का सम्बन्ध धर्म विशेष से नहीं होता। अतएव सभी मानव जाति को प्रकृति को अपना मूल अस्तित्व समझना चाहिए। शुद्ध पेय जल मानव जाति एवं जीव जंतु सभी के लिए एक आवश्यक तत्व है। सृष्टि जीवन के प्रारम्भ में जल निर्मल था, वायु स्वच्छ थी, भूमि शुद्ध थी एवं मनुष्य के विचार भी शुद्ध थे। हरी-भरी इस प्रकृति में सभी जीव-जन्तु तथा पेड़-पौधे बड़ी स्वच्छन्दता से पनपते थे। चारों दिशाओं में ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ का वातावरण था तथा प्रकृति भली-भाँति पूर्णतः सन्तुलित थी। किन्तु जैसे-जैसे समय बीता, मानव ने विकास और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शुद्ध जल, शुद्ध वायु तथा अन्य नैसर्गिक संसाधनों का भरपूर उपभोग किया। मनुष्य की हर आवश्यकता का समाधान निरसन ने किया है, किन्तु बदले में मनुष्य ने प्रदूषण जैसी कभी भी खत्म न होने वाली समस्या पैदा कर दी है। वर्षा के जल को प्रकृति द्वारा एक नियत समय पर, नियत मात्रा में हम प्राप्त करते हैं। अतः इसका संरक्षण करना भी हमारे लिए अति आवश्यक प्रक्रिया होनी चाहिए। वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश भर के ग्राम प्रधानों एवं मुखिया को पत्र लिख के वर्षा जल संग्रहित करने की अपील की थी। यह पहला मौका था जब ग्राम प्रधानों को किसी प्रधानमंत्री ने जल संचयन के लिए पत्र लिखा था।

अपीलों का कितना असर है यह पटाखेबाजों ने दिखा दिया

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

A photograph capturing a festive scene on a city street. In the foreground, a massive pile of red and silver confetti lies scattered across the asphalt. Several people are walking away from the camera; one man in a white shirt and dark trousers is prominent on the left, while others in darker clothing follow behind. In the background, a small fire or explosion is visible, sending a large plume of smoke into the air. The overall atmosphere suggests a celebration, possibly Diwali, has just taken place.

राजधानी दिल्ली को माना जाता है। इस दिवाली के दौरान दिल्ली ने इस कथन पर अपनी मोहर लगा दी है। दिल्ली के प्रदूषण ने भारत के सभी शहरों को मात कर दिया है। वाय प्रदूषण सूची के मुताबिक प्रदूषण का आंकड़ा 50 अच्छा, 100 तक संतोषजनक, 300 तक खतरनाक, 400 तक ज्यादा खतरनाक और 500 तक अत्यंत खतरनाक माना जाता है लेकिन आप अगर इस दिवाली पर दिल्ली के प्रदूषण की हालत जान लेंगे तो आप दंग रह जाएंगे। इस बार दिल्ली के आस-पास और दिल्ली के अंदर कुछ इलाकों में वायु-प्रदूषण 1100 अंकों को भी पार कर गया है। ऐसा कहा जाता है कि अकेली दिल्ली में 2019 में सिर्फ प्रदूषण से 17500 लोगों की मौत हुई थी। इस साल मरने वालों की संख्या पता नहीं कितनी ज्यादा निकलेगी। प्रदूषण के कारण बीमार होने वालों की संख्या तो कई गुना होगी। प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य की जो अप्रकट हानि होती रहती है, उसे जानना और नापना तो कहीं ज्यादा मुश्किल है। यह तब है, जबकि दिल्ली में आप पार्टी की बड़ी जागरूक सरकार है और प्रधानमंत्री मोदी का दिल्ली में राज है। यह ठीक है दिल्ली के मुख्यमंत्री और भारत के प्रधानमंत्री खुद पटाखेबाज नहीं हैं और उन्होंने लोगों से अपील भी की कि वे पटाखेबाजी से परहेज करें लेकिन लोगों पर उनका कितना असर है, यह प्रदूषण की मात्रा ने सिद्ध कर दिया है। लोगों के दैनंदिन आचरण में परिवर्तन ला सके, ऐसे नेताओं का आज देश में अभाव है। हमारे पास कोई महिंद्र दयानंद, गांधी या सुभाष जैसे नेता नहीं हैं तो कोई बात नहीं, लेकिन इतने साधु-संत, मुल्ला-मौलवी और पादरी-पुरोहित क्या कर रहे हैं? उन्होंने अपने अनुयायियों को क्या कुछ प्रेरित किया? दिवाली के अलावा भी दर्जनों त्यौहार भारतीय लोग मनाते हैं लेकिन क्या उनमें वे पटाखे छुड़ाते हैं? नहीं, तो क्या वे त्यौहार फ़िके हो जाते हैं? यों भी दिवाली और पटाखेबाजी का कोई अन्योन्याश्रित संबंध नहीं है। दोनों एक-दूसरे के पर्याय नहीं हैं अर्थात् ऐसा नहीं है कि यदि एक नहीं होगा तो दूसरा नहीं होगा। पटाखेबाजी तो दो-चार दिन ही चलती है लेकिन प्रदूषण फैलता है, कई अन्य कारणों से। जैसे धूल उड़ना, पराली जलाना, वातानुकूल की बढ़ोतारी, पुराने ट्रकों, कारों और रेल-इंजिनों का दौड़ना, कोयले से कारखाने चलाना। इन सब प्रदूषणकारी कामों पर रोक लगे या इन्हें घटाया जाए, तब जाकर हम उस लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं, जिसकी घोषणा ग्लासगो के जलवायु सम्मेलन में करके हमारे प्रधानमंत्री ने सारी दुनिया की वाहवाही लूटी है। सबसे पहले हमें पश्चिम की उपभोक्तावादी जीवन-पद्धति की नकल छोड़नी चाही और अपने रोजमर्ग के जीवन को प्राचीन भारतीय शैली के आधार पर आधुनिक बनाना होगा।

आवश्यक सचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें।

संक्षिप्त समाचार

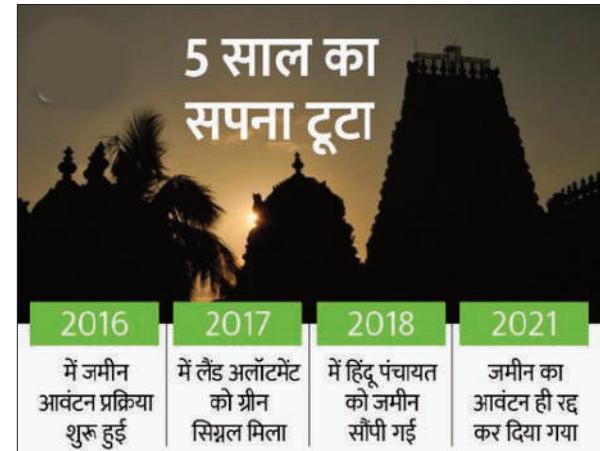
इमरान के मजहबी मामलों के एडवाइजर बोले- पुरुष भी बहुत खूबसूरत, विज्ञापनों में महिलाओं की जरूरत क्या है



एजेंसी, इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने मजहबी मामलों में सलाह देने के लिए भी एक एडवाइजर यानी सलाहकार रखा हुआ है। इन महाशय का नाम है मौलाना ताहिर अशरफी। कुछ लोग इन्हें 'मौलाना टुब्ज़' भी कहते हैं। ऐसा क्यों, ये हम आपको बाद में बताएंगे। यहां बात मौलाना अशरफी के नए बयान की। इसके बाद उनका जमकर मजाक उड़ रहा है। मूला अशरफी ने सोमवार को कहा- हमारे मुल्क में पुरुष भी बहुत खूबसूरत हैं। कंपनियां छढ़ (विज्ञापन) के लिए इनका इस्टोमेल क्यों नहीं करतीं? क्यों सिर्फ महिलाओं को ही तवज्ज्ञी दी जाती है। पाकिस्तान के अखबार 'द न्यूज़' की एक रिपोर्ट के मुताबिक, लाहौर में मीडिया से बातचीत में मौलाना अशरफी के नेट बात पर गहरी नाराजगी जारी की विज्ञापनों में महिलाओं को ही तवज्ज्ञी दी जाती है। अशरफी ने कहा- मेरी समझ में यह नहीं आता कि हमारे मुल्क में बहुत खूबसूरत मर्द मौजूद हैं, इसके बावजूद विज्ञापनों में महात्मा गांधी को तरजीह क्यों दी जाती है। अधिकर भी मर्दों में क्या कही है। कंपनियां हर मामले में महिलाओं को ही हायर करती हैं और उनको ही विज्ञापनों में काम दिया जाता है।

मौलाना विज्ञापनों में महिलाओं को दियाजाने और उन्हें तरजीह देने के मुद्दे पर यासे खफा थे। उन्हें कहा- जानवारबाज और घेमतलब भी यात्रीन (महिलाओं) को विज्ञापनों में तरजीह दी जाती है। अधिकर उन्हें डुबान क्यों दियाजाना जाता है। मैं इस तरह की हरकतों के सरख खिलाफ हूँ। मौलाना ने प्रधानमंत्री इमरान खान के विज्ञापनों से सराहा। कहा- दुबानी में इस्लामोफोबिया को लेकर कई तरह की बातें और बीजें ही रही हैं। हमारे वजीर-ए-आजम ने इसके खिलाफ मुद्देश लेकर ही और इसके अंतर्गत नतीजे सामने आ रहे हैं। अब जो लोग वेबसाइट्स पर इस्लाम के खिलाफ पीस्ट करते, उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा। उल्लेखों को मुल्क में अश्लीलता कम करते के लिए प्रयास करते रहिए। मौलाना ताहिर अशरफी इमरान खान के 22 एडवाइजर्स में से एक है। मजहबी मामलों पर बड़ी कठिनी के हेड हैं और इमरान को मजहबी मामलों पर उन्हें बताते हैं। दरअसल, पिछले साल मौलाना ने जियो न्यूज़ को एक इंटरव्यू दिया था और उसमें वो शराब के बारे में बतार आ रहे थे। कुछ साल पहले लाहौर में भी उन्हें गांधी में शराब पीते हुए पकड़ गया था। हालांकि, इसके बावजूद इमरान ने उन्हें रिलीजन अफेयर्स का एडवाइजर बना लिया।

इस्लामाबाद में बनने वाले हिंदू मंदिर की मंजूरी रद्द, जमीन देने से भी इनकार किया



एजेंसी, इस्लामाबाद। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में अब हिंदू मंदिर नहीं बनेगा। इमरान खान सरकार के अंडर आवंटन के लिए जमीनी आवंटन का

अलोकशन रद्द कर दिया है। इस मंदिर को लेकर सरकार की काफी तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। मंदिर निर्माण को लेकर आई इस नई अंडरिट को लेकर सरकार की काफी तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरकार की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। अलोकशन की तारीफ हो रही थी। अब उनके ग्रीन एवं रेड रिपोर्ट्स में यह नहीं दिख रहा है।

अलोकशन की तारीफ हो रही थी। सरकार के मैं जमीन आवंटन रद्द होने के बाद अब तक

सरक

